

श्री सद्गुरू साईनाथ-सगुणोपसना

भाग १ ला

काकडआरती

पहाटे पाच वाजता — प्रातः काळचा उपासनाक्रम (प्रातः पाँच बजे — प्रातः काल उपासना)

9 - जोडूनिया कर (भूपाळी)

जोडूनिया कर चरणी ठेविला माथा। परिसावी विनंतीमाझी सद्गुरूनाथा।। १।। असो नसो भाव आलो तुझिया ठाया। कृपा—दृष्टी पाहे मजकडे सद्गुरूराया।। २।। अखंडित असावे ऐसे वाटते पायी। सांडूनी संकोच ठाव थोडासा देई।। ३।। तुका म्हणे देवा माझी वेडीवाकुडी। नामे भवपाश हाती आपुल्या तोडी।। ४।।

२ - उठा पांडुरंगा (भूपाळी)

उठा पांडुरंगा आता प्रभातसमयो पातला। वैष्णवांचा मेळा गरूडपारी दाटला।। १।। गरूडपारापासूनी महाद्वारा-पर्यंत। सुरवरांची मांदी उभी जोडूनिया हात।। २।। शुक-सनकादिक नारद-तुंबर मक्तांच्या कोटी। त्रिशूल डमरू घेउनि उभा गिरिजेचा पती।। ३।। कलीयुगीचा मक्त नामा उभा कीर्तनी। पाठीमागे उभी डोळा लावूनिया जनी।। ४।।

३ - उठा उठा (भूपाळी)

(चाल-घनश्यामसुंदरा श्रीधरा॰)

उठा उठा श्रीसाईनाध गुरू चरणकमल दावा। आधि-व्याधि भवताप वारूनी तारा जडजीवा।! घृ॰।। गेली तुम्हां सोडुनिया भवतमरजनी विलया। परि ही अज्ञानासी तुमची मुलवि योगमाया। शक्ति न आम्हां यक्तिंचितही तिजला साराया। तुम्हीच तीते सारूनि दावा मुख जन ताराया।। चा॰।। भो साईनाथ महाराज भवतिमिरनाशक रवी। अज्ञानी आम्ही किती तुम्हीच तव वर्णावी थोरवी। ती वर्णिता भागले बहुवदनि शेष विधि कवी।। चा॰।। सकृप होउनि महिमा तुमचा तुम्हीच वदवावा।। आधि॰।। उठा ।। १।। भक्त मनी सद्भाव धरूनि जे तुम्हां अनुसरले। घ्यायास्तव ते दर्शन तुमचे द्वारि उमे ठेले। ध्यानस्था तुम्हांस पाहूनी मन अमुचे घाले। परि त्वद्वचनामृत प्राशायाते आतुर झाले।। चा॰।। उघडूनी नेत्रकमला दीनबंधु रमाकांता। पाही बा कृपादृष्टी बालका जशी माता। रंजवी मधुरवाणी हरी ताप साईनाथा।। चा॰।। आम्हीच अपुले काजास्तव तुज कष्टवितो देवा। सहन करिशिल ते ऐकुनि द्यावी भेट कृष्ण द्यावा।। उतः उतः।। आधि-व्याघि।। 311

४ – दर्शन द्या (भूपाळी)

चत पांडुरंगा आता दर्शन द्या सकळा। झाला अरूणोदय सरली निद्रेची वेळा। १।। संत साघु मुनी अवघे झालेती गोळा। सोख शेजे सुखे आता बघु द्या मुखकमला।। २।। रंगमंडपी महाद्वारी झालीसे दाटी। मन चतावीळ रूप पहावया दृष्टी।। ३।। राही रखुमाबाई तुम्हां येऊ द्या दया। शेजे हालवुनी जागे करा देवराया।। ४।। गरूड हनुमंत चमे पहाती वाट। स्वर्गीचे सुरवर घेउनि आले बोमाट।।५।। झाले मुक्तद्वार लाम झाला रोकडा। विष्णुदास नामा चमा घेऊनि काकडा।। ६।।

५ - पंचारती (अभंग)

घेउनिया पंचारती। करू बाबांसी आरती।। करू साईसी आरती। करू बाबांसी आरती।।१।। उठा उठा हो बांधव। ओवाळू हा, रखुमाधव।। साई रमाधव। ओवाळू हा रखुमाधव।। २।। करूनिया स्थीर मन। पाहू गंभीर हे ध्यान।। साईचे हे ध्यान। पाहू गंभीर हे ध्यान।। ३।। कृष्णनाथा दत्तसाई। जडो चित्त तुझे पायी।। चित्त देवा पायी। जडो चित्त तुझे पायी।। ४।।

६ - चिन्मयरूप (काकड आरती)

काकड आरती करीतो साईनाथ देवा। चिन्मयरूप दाखवी घेउनि बालक लघुसेवा।। कृ।। काम क्रोध मद मत्सर आटुनी काकड केला। वैराग्याचे तूप घालुनि मी तो मिजवीला। साईनाथगुरूमिळवलने तो मी पेटविला। तद्वृत्ती जाळुनी गुरूने प्रकाश पाडिला। द्वैत—तमा नासूनी मिळवी तत्स्वरूपी जीवा। वि॰।।कां।।वि॰।।१।।भू-खेचर व्यापूनी अवघे इत्कमली राहसी। तोचि वत्तदेव तू शिरडी राहुनि पाक्सी। राहुनि येथे अन्यत्रहि तू मक्तांस्तव घावसी। निरसुनिया संकटा दासा अनुभव दाविसी। न कळे त्वल्लीलाही कोण्या देवा वा मानवा।। वि॰।। कां।। वि॰।। २।। त्वघश दुंदुभीने सारे अंबर हे कोंदले। सगुण मूर्ति पाहण्या आतुर जन शिरडी आले। प्राशुनि त्वद्वचनामृत आमुचे देहमान हरपले। सोडूनिया दुरिमान मानस त्वच्चरणी वाहिले। कृपा करूनिया साईमाउले दास पदरी ध्यावा।। वि॰।। कां।। वि॰।। ३।।

७ – पंढरीनाथा (काकडआरती)

मक्तिचिया पोटी बोध काकडा ज्योती। पंचप्राण जीवे भावे ओवाळू आरती।। १।। ओवाळू आरती माइया पंढरीनाथा। माइया साइनाथा। दोन्ही कर जोडोनी चरणी ठेविला माथा।। धृ॰।। काय महिमा वर्णू आता सांगणे किती। कोटी ब्रह्महत्या मुख पाहता जाती।। २।। राही रखुमाबाई उभ्या दोधी दो बाही। मयूरिपच्छ चामरे ढाळिति ठायीचे ठायी।। ३।। तुका म्हणे दीप घेचिन उन्मनीत शोभा। विटेवरी उभा दिसे लावण्यगाभा।। ४।। ओवाळू ॰।।

८ – उठा उठा (पद)

चठा साघुसंत साघा आपुलाले हित।। जाईल जाईल हा नरदेह मग कैंचा भगवत।। १।। चठोनिया पहाटे बाबा उमा असे विटे।चरण त्यांचे गोमटे अमृतदृष्टी अवलोका।। १।। चठा चठा हो वेगेसी चला जाऊया राचळासी। जळतिल पातकांच्या राशी काकड आरती देखिलिया।। ३।। जागे करा रूक्मिणीवर, देव आहे निजसुरात। वेगे लिंबलोण करा दृष्ट होईल तयासी।। ४।। दारी वाजंत्री वाजती ढोल दमामे गर्जती।होते काकड आरती माइया सद्गुरूरायांची।। ५।। सिंहनाद शंखमेरी आनंद होतो महाद्वारी। केशवराज विटेवरी नामा चरण वंदितो।। ६।।

भजन

साईनाथगुरू माझे आई। मजला ठाव द्यावा पायी।। दत्तराज गुरू माझे आई। मजला ठाव द्यावा पायी।। श्रीसच्चिदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय।।

९ - श्री साईनाथप्रमताष्टक

(पृथ्वी)

प्रभात समयी नमा शुभ रविप्रभा फाकली। स्मरे गुरू सदा अशा समयि त्या छळे ना कली।। म्हणोनि कर जोडूनी करू आता गुरूप्रार्थना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। १।। तमा निरसि भानु हा गुरुहि नासि अज्ञानता। परंतु गुरुचि करी न रविही कधी साम्यता।। पुन्हा तिमिर जन्म घे गुरू कृपेनि अज्ञानता। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। २।। रवि प्रगट होउनि त्वरित घालवी आलसा। तसा गुरूहि सोडवी सकल दुष्कृति लालसा। हरोनि अभिमानही जडवि तत्पदी भावना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ३।। गुरूसि उपमा दिसे विधिहरीहरांची उणी। कुलेनि मग येई ती कवनि या उगी पाहुणी।। तुझीच उपमा तुला बरवि शोभते सज्जना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ४।। समाधि उतरोनिया गुरू चला मशीदीकडे। त्वदीय वचनोक्ति ती मधुर वारिती साकडे।। अजातरिपू सद्गुरो अखिलपातका भंजना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ५।। अहा सुसमयासि या गुरू उठानिया बैसले। विलोकुनि पदाश्रिता तदिय आपदे नासिले।। असा सुहितकारि या जगति कोणीही अन्य ना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ६।। असे बहुत शाहणा परि न ज्या गुरूचि कृपा। न तत्स्वहित त्या कळे करितसे रिकाम्या गपा।। जरी गुरूपदा घरी सुदृढ मक्तिने तो मना। समर्थ गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ७।। गुरो विनंति मी करी इदयमंदिरी या बसा। समस्त जग हे गुरूस्वरूपची ठसो मानसा।। घडो सतत सत्कृति मतिहि दे जगत्पावना। समर्ध गुरू साईनाथ पुरवी मनोवासना।। ८।।

सग्धरा

प्रेमे या अष्टकासी पदुनि गुरूवरा प्रार्थिती जे प्रमाती। त्यांचे चित्तासि देतो अखिल हरूनिया भ्रांति मी नित्य शांती।। ऐसे हे साईनाथे कथुनि सुचिवले जेवि या बालकासी। तेवी त्या कृष्णपायी नमुनि सविनये अर्पितो अष्टकासी।।

श्री सव्विदानंन्र समर्थ सदगुरू साईनाथ महाराज की जय।।

90 - रहम नजर (पद)

साई रहम नजर करना, बच्चों का पालन करना।। घृ॰।। ।। x 2।। जाना तुमने जगत्पसारा, सबही झूठ जमाना।। x 2।। साई॰।। ।। x 2।। १।। मैं अंघा हूँ बंदा आपका, मुझको प्रमु दिखलाना।। x 2।। साई॰।। x 2।। २।। दासगनु कहे अब क्या बोलू, थक गई मेरी रसना।। ।। x 2।। साई॰।। x 2।। साई॰।। x 2।। साई॰।। x 2।। ३।।

११ - रहम नजर (पद)

रहम नजर करो, अब मोरे साई, तुम बिन नहीं मुझे मा—बाप—माई, रहम नजर करो।। घृ॰।। x 2।। मैं अंधा हूँ बंदा तुम्हारा।। x 2।। मैं ना जानूं (x 3), अल्लाईलाही।। रहम।। १।। खाली जमाना मैंने गमाया,।। साथी आखरका (x 3) किया न कोई।। रहम।। २।। अपने मशीदका झाडू गणू है।। मालिक हमारे, ।। (x 3) तुम बाबा साई।। रहम।। ३।।

१२ - पद

तुज काय देऊ सावळ्या मी खाया तरी हो तुज काय देऊ सद्गुरू मी खाया तरी हो। मी दुबली बटीक नाम्याची जाण श्रीहरि (X 2) ।। घृ॰।। उच्छिष्ट तुला देणे ही गोष्ट ना बरी हो (X 2) तू जगन्नाथ, तुज देऊ कशी रे भाकरी। (X 2) नको अंत मदीय पाहू सख्या भगवंता। श्रीकांता। माध्यान्ह रात्र उलटोनि गेली ही आता। आण चित्ता। जा होईळ तुझा रे काकडा की राउळांतरी हो। (X 2) आणतील भक्त नैंवेद्यहि नानापरी।। (X 2)।। घृ॰।।

१३ - श्री सद्गुरू (पद)

श्री सद्गुरू बाबासाई हो ।। (X 2)।। तुज वांचुनि आश्रय नाही, भूतली (X 2)।। घृ॰।। मी पापी पतित धीमंद। (X 2) तारणे मला गुरूनाथा, झडकरी।। (X 2)।। ।। १।। तू शांतिक्षमेचा मेरू हो (X 2) तू भवार्णवीचे तारू, गुरूवरा।। २।। गुरूवरा मजिस पामरा, आता उद्धरा (त्वरित लवलाही X 2), मी बुडतो भवभय डोही उद्धरा। (X 2) श्री सद्गुरु॰।। ३।।

श्री सिच्चदानंद समर्थ सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय

ॐ राजाधिराज योगीराज परब्रह्म साईनाथ महाराज श्री सच्चिदानंद समर्थ सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय

काकडआरतीचा कार्यक्रम समाप्त।



माध्यान्ह आरती

दुपारी १२ वाजता

(मध्यान्ह आरती – दोपहर १२ बजे) (१) अभिने

घेउनियां पंचारती। करं बाबांसी आरती॥ करं साईसी आरती। करं बाबांसी आरती॥१॥ उठा उठा हो बांधव। ओंबाळूं हा रमाधव॥ सांई रमाधव। ओंबाळूं हा रमाधव॥२॥ करनीयां स्थीर मन। पाहूं गंभीर हें ध्यान॥ साईचें हें ध्यान। पाहूं गंभीर हें ध्यान॥३॥ कृष्णनाथा दत्तसाई। जहीं चित्त तुझे पायीं॥ सांई तुझे पायीं। जहीं चित्त तुझे पायीं॥४॥

(२) आरती

आरती सांईबाबा सीख्यदातार जीवा। घरणरजातलीं। घावा दासां विसावा, भक्ताविसावा॥ आरती साईबाबा॥

जाळुनियां अनंग। स्वस्वस्पीं राहे दंग। मुमुक्षुजनां दावी। निज होळां श्रीरंग, होळां श्रीरंग। आरती साईबाबा॥१॥

जया मनीं जैसा भाव। तया तैसा अनुभव। वाविसी व्याधना। ऐसी तुन्नी ही भाव, तुन्नी ही भाव। आरती साईबाबा॥२॥

तुमधे नाम ध्यातां। हरे संसृतिव्यथा। अगाध तव करणीमार्ग दाविसी अनाथा, दाविसी अनाथा। अरती सांईबाबा॥३॥

कलयुनीं अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण द्यालासे। स्वामी दत्त दिगंबर, दत्त दिगंबर। आरती साईबाबा॥४॥

आठां दिवसां गुरुवारीं। भक्त करिती वारी। प्रभुपद पहावया। भवभय निवारी, भय निवारी। आरती साईबाबा॥५॥

माञ्चा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरज सेवा। मांगणें हेंचि आता। तुम्हा देवाधिदेवा, देवाधिदेवा। आरती साईबाबा॥६॥

इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निज सुख। पाजावें माधवा या। सांभाळ निज आपुली भाक, आपुली भाक। आरती सांईबाबा॥७॥

आरती सांईबाबा सौख्यदातार जीवा। चरणरजातलीं। घावा दासां विसावा, भक्तां विसावा॥ आरती सांईबाबा॥

(२) (अ) आरती

जय देव जय देव दता अवध्ता। साई अवध्ता। जोडुनि कर तब चरणीं ठेवितों माथा। जय देव जय देव॥

अवतरसी त्ं येतां धमितं ग्लानी। नास्तिकांनाही त् लाविसि निजभजनीं। दाविसि नाना लीला असंख्य रूपानी। हरिसी दीनांचें त् संकट दिनरजनी॥ जय देव जय देव॥१॥

यवनस्वरुपीं एक्पा दर्शन त्वां दिधलें। संशय निरसुनियां तद्दैता धालविलें। गोपीचंदा मंदा त्वांधी उद्धरिलें। मोमिन वंशीं जन्मुनि लोको तारियलें॥ जय देव जय देव॥२॥

धद न तत्वी हिंद्यवनांचा काही। दावायासी हाला पुनरिप नरदेही। पाहसि प्रेमानें त् हिंद् यवनांही। दाविसि आत्मत्वाने व्यापक हा साई॥ जय देव जय देव॥३॥

देवा साईनाथा त्वत्पदनत व्हावें। परमायामोहित जनमोचन ग्रणि व्हावें। त्वत्कृपया सकलांचें संकट निरसावें। देशिल तरि दे त्वधश्र कृष्णानें गावें॥ जय देव जय देव॥४॥

जय देव जय देव दत्ता अवध्ता। साई अवध्ता। जोडुनि कर तव चरणीं ठेवितों माथा। जय देव जय देव॥

(३) अभंग

शिरडी माझे पंढरपुर। साईबाबा रमावर। साई रमावर, साईबाबा रमावर॥

शुद्ध भक्ति चंद्रभागा। भाष पुंडलीक जागा। पुंडलीक जागा, भाव पुंडलीक जागा॥

या हो या हो अवधे जन। करा बाबांसी वंदन। बाबांसी वंदन, करा बाबांसी वंदन॥

गण् म्हणे बाबा साई। धांव पाव माझे आई। पाव माझे आई,धांव पाव माझे आई॥

(४) नमन

घालीन लोटांगण,वंदीन चरण डोळयांनीं पाहीन रूप तुझें॥ प्रेमें आलिंगन, आनंदें प्रजिन भावें ओंवाळिन म्हणेनामा ॥१॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्यमेव बंधुश्य सखा त्यमेव। त्वमेव विधा द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम् देवदेव ॥२॥

कायेनवाचा मनसे द्वियैवा बुद्धयात्मना वा प्रकृतिस्यभावात। करोमि यदस्यकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥३॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वास्देव हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकी नायक रामचंद्र भजे ॥४॥

(५) नामस्मरण

हरेराम हरेराम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ (इति जिन्नार)

(६) पूष्पांजली

यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धमाणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सर्थत यत्र पूर्वे साध्या सति देवाः॥

राजाधिराजाय प्रसद्धासाहिने नमी वर्ष वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान्कामकामाय महां कामेश्वरो वैभवणो खधातु। कुबेराय वैभवणाय महाराजाय नमः। 🕉 स्वस्ति।

साम्राज्यं भीज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्यायी स्यात्सावभीमः सावियुष आतादापराधित् पृथिव्ये समुद्रपर्यताया मुक्ति चारी ॥ए॥२॥ पायीं पादुका जपमाला एकराळिति। श्लोकोऽभिगीतो तदप्येष मरुतः आविक्षितस्य परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इति॥

(७) नमस्काराष्ट्रक

अनंता तुला तें कसें रे स्तवावें। अनंता तुला तें कसें रे नमावें। अनंता मुखांचा शिणे शेष गातां। नमस्कार साष्टांग श्री सांईनाथा॥१॥

स्मरावें मनीं त्वत्पदां नित्य भावें। उरावें तरी भक्तिसाठीं स्वभावें। तरावें जगा तारुन मायताता। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥२॥

वसे जो सदा दावया संतलीला। दिसे अज्ञ लोकांपरी जो जनांला। परी अंतरीं ज्ञान कैवल्यदाता। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥३॥

बरा लाधला जन्म हा मानवाचां। नरा सार्थका साधनीभूत साचा॥ धरं सांईप्रेमा गळाया अहंता। नमस्कार साष्टांग श्री सांईनाथा ॥४॥

धरावें करीं सान अल्पज्ञ बाला। करावें अम्हां धन्य चुंबोनि गाला। मुखीं घाल प्रेमें खरा ग्रास आतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥५॥

सुरादीक ज्यांच्या पदा वंदिताती। शुकादीक ज्यांतें समानत्व देती॥ प्रयागादि तीर्थे पदीं नम्र होतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥६॥

तुझ्या ज्या पदा पाहतां गोपबाली। सदा रंगली चित्स्वस्पीं मिळाली॥ करी रासकीडा सवें कृष्णनाथा। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥७॥

तुला मागतों मागणें एक घावें। करा जोडितों दीन अत्यंत भावें॥ भवीं मोहनीराज हा तारिं आतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥८॥

(=) प्रार्थना

एसा यह बा। साई दिगंबरा। अक्षयस्य अवतारा। सर्वीहे व्यापक त्। श्रुतिसारा। अनुसयाप्रत्रेकुमारा ॥धु॥ काशी स्नान जप, प्रतिदिवशीं। कोल्हापुर भिक्षेसी। निर्मल निद् तुंगा, जल प्राशी। निद्रा माहुर देशीं ॥ए॥१॥ झोळी लोंबतसे वाम करीं। त्रिश्ल-इमर-धारी। भक्तां वरद सदा सुखकारी। देशील कमंडल् मृगछाला। धारण करिशी बा। नागजटा मुगुट शोभतो माथां ॥ए॥३॥ तत्पर तुझ्या या जे ध्यानीं। अक्षय त्यांचे सदनीं। लक्ष्मी वास करो दिनरजनीं। रक्षिसि संकट वारुनि ॥ए॥४॥ या परिध्यान तुझें गुरुराया। दृश्य करीं नयनां या। पूर्णानंदसुखें ही काया। लाविसि हिस्एा गाया॥ए॥५॥

(९) श्रीसांईनाथमहिम्नस्तोत्रम्

सदा सत्स्वस्पं चिदानंदकंदं, जगत्संभवस्थानसंहारहेतुम्। स्वभवतेच्छ्या मानुषं दर्शयंतं, नमामीश्वरं सदगुरु सांईनाथम् ॥१॥

भवष्वांतविष्वंसमार्तंडमीडयं, मनोवागतीतं मुनीर्घ्यानगम्यम्। जगद्व्यापकं निर्मतं निर्मृणं त्वां, नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥२॥

भवांभोधिमन्नार्दितानां जनानां, स्वपादाश्रितानां स्वभिवतिप्रयाणाम्। समुद्धारणार्थं कली संभवंतं, नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥३॥

सद्य निंबवृक्षस्य मूलाधिवासात्सुधास्माविणं तिक्तमप्यप्रियं तम्। तसं करपवृक्षाधिकं साधयंतं, नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥४॥

सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले भवद्भावबुद्धया सपर्यादिसेवाम्। नृणां कुर्वतां भुक्तिमुक्तिप्रदं तं, नमामीश्वरं सदगुरु सांईनाथम् ॥५॥

अने काश्रुतातक्यलीलाविलासैः, समाविष्कृतेशानभास्वत्प्रभावम्। अहंभावहीनं प्रसन्नात्मभावं. नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥६॥

सर्ताः विश्रमाराममेवाभिरामं सदा सज्जैः संस्तुतं सन्नमद्भिः। जनामोददं भक्तभद्रप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्भुरु साईनाथम् ॥७॥

अजन्माधमेकं परं ब्रह्म साक्षात्स्वयं संभवं राममेवावतीर्णम्। भवद्वर्शनात्संपुनीतः प्रभोद्धं, नमामीश्वरं सद्गुरु साईनाथम् ॥⊏॥

श्रीसाईशकृपानिधेप्रेखलनृणां सर्वार्थसिद्धिप्रदः। युष्पत्पादरजग्रभावमतुलं धातापि वक्ताध्समः॥ सद्भक्त्या शरणं कृताजिल्पुटः संप्रापितोप्रेस्म प्रभो, श्रीमत्साईपरेशपादकमलान्नान्यच्छरण्यं मम् ॥९॥

साईस्प्रधत्राक्वोत्तमं, भक्तकामविद्धधद्भां प्रभुन् माययोपहतचित्तशुद्धये, चिंतयाम्यहमहर्निशं मुद्धा ॥१०॥

शरत्सुथांशुप्रतिमप्रकाशं, कृपापात्रं तव साईनाथः। त्वदीयपादान्तसमाभ्रितानां स्वच्छायया तापमपाकरोतुः॥११ः॥

उपासनादैवतसाईनाथ, स्तैवर्मयो-पासनिना स्तुतस्त्वम। स्पेन्पनो मे तव पादयुग्पे,भृङ्गो, यथाको मक्तंदलुखः॥१२॥

अनेक्जन्मार्जीतपाप्संक्षयो, भवेद्भवत्पादसरोजदर्शनात। क्षमस्य सर्वानप्राध्यंजकानप्रसीद साईश गुरो दयानिध॥१३॥

श्रीसाईनाथचरणामृतपूतचित्तास्तत्पादसेवनरतात्सततं च भक्त्या। संसारजन्यदुरितीधविनिर्गतास्ते कैवल्यधाम परमं समवाप्नुवन्ति ॥१४॥

(१०) प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे (श्रीप्रभो साईनाथ)॥१॥

श्रीसिच्चदानंदसद्गुरु साईनाथ महाराज की जय



धूप आरती

(सायंकाली ६।। अगर ७ बाजना दिनमानाप्रमाणे)

१ - साईबाबा (आरती)

आरती सांईबाबा सीख्यदातार जीवा। चरणरजातलीं। घावा दासां विसांवा, भक्तांविसांवा॥ आरती सांईबाबा॥

जाळुनिया अनंग। स्वस्वस्पीं राहे दंग। मुमुक्षुजनां दावी। निज डोळां श्रीरंग, डोळां श्रीरंग। आरती साईबाबा।स्मि

जया मनीं जैसा भाव। तया तैसा अनुभव। व्यक्सि व्याधना। ऐसी तुद्धी ही भाव, तुद्धी ही भाव। आरती साईबाबा॥२॥

तुमधें नाम ध्यातां। हरे संसृतिव्यथा। अगाध तव करणीमार्ग दाविसी अनाथा, दाविसी अनाथा। आरती साईबाबा॥३॥

कलयुगीं अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण द्वालासे। स्वामी दत्त दिगंबर, दत्त दिगंबर। आरती साईबाबा॥४॥

आठां दिवसां गुरुवारीं। भक्त करिती वारी। प्रभुपद पहावया। भवभय निवारी, भय निवारी। आरती साईबाबा॥५॥

माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरज सेवा। मांगणें हेंचि आता। तुम्हा देवाधिदेवा, देवाधिदेवा। आरती साईबाबा॥६॥

इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निज सुख। पाजावें माधवा या। सांभाळ निज आपुली भाक, आपुली भाक। आरती सांईबाबा॥७॥

आरती सांईबाबा सौख्यदातार जीवा। चरणरजातलीं। धावा दासां विसांवा, भक्तां विसांवा॥ आरती सांईबाबा॥

२ - शिरडी माझे पंढरपुर (अभंग)

शिरडी माझे पंदरपुर। साईबाबा रमावर। साई रमावर, साईबाबा रमावर॥

शुद्ध भक्ति चंद्रभागा। भाव पुंडलीक जागा। पुंडलीक जागा, भाव पुंडलीक जागा॥

या हो या हो अवधे जन। करा बाबांसी वंदन। बाबांसी वंदन, करा बाबांसी वंदन॥

गण् म्हणे बाबा साई। धांव पाव माझे आई। पाव माझे आई, धांव पाव माझे आई॥

३ – घालीन लोटांगण (नमन)

घालीन लोटांगण,वंदीन चरण होळयांनीं पाहीन रूप तुझें॥ प्रेमें आलिंगन, आनंदें पूजिन भावें ओंबाळिन म्हणेनामा ॥१॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्यमेव बंधुश्च सखा त्यमेव। त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्यमेव सवं मम् देवदेव ॥२॥

कायेनवाचा मनसे द्वियैवा बुद्धयात्मना वा प्रकृतिस्थभावात। करोमि यद्यत्सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ॥३॥

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेव हरिम्। श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लमं जानकीनायकं रामचंद्र भजे ॥४॥

४ - नामस्मरण

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥ (इति क्रिनर)

५ - नमस्काराष्ट्रक

अनंता तुला तें कसें रे स्तवावें। अनंता तुला तें कसें रे नमावें। अनंता मुखांचा शिणे शेष गातां। नमस्कार साष्टांग श्री सांईनाथा॥१॥

स्मरावें मनीं त्वत्पदां नित्य भावें। उरावें तरी भक्तिसाठीं स्वभावें। तरावें जगा तारुन मायताता। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥२॥

वसे जो सदा दावया संतलीला। दिसे अज्ञ लोकांपरी जो जनांला। परी अंतरीं ज्ञान कैवल्यदाता। नमस्कार साष्टांग श्रीसाईनाथा ॥३॥ बरा लाधला जन्म हा मानवाचा। नरा सार्थका साधनीभूत साचा॥ धरूं साईप्रेमा गळाया अहंता। नमस्कार साष्टांग श्री सांईनाथा ॥४॥

धरावें करीं सान अल्पज्ञ बाला। करावें अम्हां धन्य चुंबोनि गाला। मुखीं घाल प्रेमें खरा ग्रास आतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥५॥

सुरादीक ज्यांच्या पदा वंदिताती। शुकादीक ज्यांतें समानत्व देती॥ प्रयागादि तीर्थे पदीं नम्र होतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥६॥

तुझ्या ज्या पदा पाहतां गोपबाली। सदा रंगली चित्स्वरुपीं मिळाली॥ करी रासक्रीहा सवें कृष्णनाथा। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥७॥

तुला मागतों मागणें एक घावें। करा जोहितों दीन अत्यंत भावें॥ भवीं मोहनीराज हा तारिं आतां। नमस्कार साष्टांग श्रीसांईनाथा ॥ ॥ ॥

६ – ऐसा येई बा (प्रार्थना)

एसा यहं ना। साई दिगंबरा। अक्षयस्य अवतारा। सर्वीह व्यापक तं। श्रुतिसारा। अनुसयप्रित्रकुमारा ॥धू॥ काशी स्नान जप, प्रतिदिवशीं। कोल्हापुर भिक्षेसी। निर्मल निद तुंगा, जल प्राशी। निद्रा माहुर देशीं ॥ए॥१॥ झोळी लोंबतसे वाम करीं। त्रिश्ल-इमस-धारी। भक्ता वरद सदा सुखकारी। देशील मुक्ति चारी ॥ए॥२॥ पायीं पादुका जपमाला कमंडलू मृग्छाला। धारण करिशी बा। नागजटा मुगुट शोभतो माथां ॥ए॥३॥ तत्पर तुझ्या या जे ध्यानीं। अक्षय त्यांचे सदनीं। लक्ष्मी वास करो दिनरजनीं। रिक्षिस संकट वारुनि ॥ए॥४॥ या परिध्यान तुझें गुरुराया। दृश्य करीं नयना या। पूर्णानंदसुखें ही काया। लाविसि हिस्गुण गाया॥ए॥५॥

७ – श्री साईनाथमहिन्मस्तोत्रम्

सदा सत्स्वस्पं चिदानंदकंदं, जगत्संभवस्थानसंहारहेतुम्। स्वभक्तेच्छ्या मानुषं दर्शयंतं, नमामीश्वरं सदगुरु सांईनाथम् ॥१॥

भवष्वांतविष्वंसमार्तंडमीडयं, मनोवागतीतं मुनीष्यांनगम्यम्। जगद्व्यापकं निर्मलं निर्गुणं त्वां, नमामीश्वरं सद्गुरु साईनाथम् ॥२॥

भवांभोधिमन्नार्दितानां जनानां, स्क्याद्मश्रितानां स्क्यिक्तिप्रयाणाम्। समुद्धारणार्थ कली संभवंतं, नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥३॥

सद्य निंबवृक्षस्य मूलाधिवासात्सुधास्माविणं तिक्तमप्यप्रियं तम्। तर्रः करपवृक्षाधिकं साधयंतं, नमामीश्वरं सदगुरु साईनाथम् ॥४॥

सदा कल्पवृक्षस्य तस्याधिमूले भवद्भावनुद्भया सपर्यादिसेवाम्। नृणां कुर्वतां भुवित्तमुवित्हादं तं, नमामीश्वरं सदगुरु सांईनाथम् ॥५॥ अनेकाश्रुतातक्यंलीलाविलासैः, समाविष्कृतेशानभास्वत्प्रभावम्। अहंभावहीनं प्रसन्नात्मभावं. नमामीश्वरं सद्गुरु साईनाथम् ॥६॥

सर्ताःविश्रमाराममेवाभिरामं सदा सज्जनः संस्तुतं सन्नमद्भिः। जनामोददं भक्तभद्रप्रदं तं, नमामीश्वरं सद्गुरु साईनाथम् ॥७॥

अजन्मायमेकं परं ब्रह्म साक्षात्स्वयं संभवं राममेवावतीर्णम्। भवदर्शनात्संपुनीतः प्रभोष्टं, नमामीश्वरं सदगुरु सोईनाथम् ॥८॥

श्रीसाईशकृपानिधेऽखिलनृणां सर्वार्थसिद्धिद्धः। युष्पत्पादरजञ्जभावमतुलं धातापि वक्ताऽक्षमः॥ सद्भक्त्या शरणं कृतांजलिपुटः संप्रापितोऽस्मि प्रभो, श्रीमत्साईपरेशपादकमलान्नान्यख्डरण्यं मम् ॥९॥ साईस्प्रधत्रायवोत्तमं, भक्तकानविद्धधद्भमं प्रभुन्। माययोपहतचित्तशुद्धयं, चित्रयाम्यहमहनिशं मुद्धा ॥१०॥

शरत्सुधांशुप्रतिमप्रकाशं, कृपापात्रं तव साईनाथा त्वदीयपादान्त्रसमाश्रितानां स्वच्छायया तापमपाक्रोतु॥११॥

उपासनादैवतसाईनाथ, स्तैवर्मयो-पासनिना स्तृतस्त्वम। रमेन्मनो मे तव पादयुग्मे,भृङ्गो, यथाब्जे मक्तंदलुब्धः॥१२॥

अनेक्जन्मार्जीतपाप्संक्षयो, भवेद्भवत्पादसरोजदर्शनात। क्षमस्य सर्वोनपराध्यंजकानप्रसीद साईश गुरो दयानिध॥१३॥

श्रीसाईनाथचरणामृतपूर्वाचत्तास्तत्पादसेवनरताःसततं च भक्त्या। संसारजन्यदुरितीधविनिर्गतास्ते कैवल्यधाम परमं समवाप्नुवन्ति ॥१४॥

८ – श्रीगुरुप्रसाद–याचना–दशक

रुसो मम प्रियांबिका, मजवरी पिताही रुसो।
रुसो मम प्रियांगना प्रियसुतात्मजाही रुसो।।
रुसो मगिनि बंघुही, न्वशुर सासुबाई रुसो।
न दत्तगुरु साई मा, मजवरी कघीही रुसो।।१।।
पुसो न सूनबाई त्या, मज न म्रातृजाया पुसो।
पुसो न प्रिय सोयरे, प्रिय सगे न ज्ञातीपुसो।।
पुसो सुद्धद ना सखा, स्वजन नाप्तबंधू पुसो।।
परी न गुरु साई माए, मजवरी कघीही रुसो।।
पुसो न अबला मुले, तरुण वृद्धही ना पुसो।
पुसो न गुरु घाकुटे, मज न थोर साने पुसो।
पुसो तच भलेबुरे, सुजन साधुही ना पुसो।
परी न गुरु साई मा, मजवरी कघीही रुसो।।
रुसो तच पलेबुरे, सुजन साधुही ना पुसो।
रुसो चतुर तत्त्वित् विबुध प्राज्ञ ज्ञानी रुसो।
रुसोहि विदुषी स्त्रिया, कुशल पंडिताही रुसो।।

न दत्तगुरु साई मा, मजवरी कघीही रुसो।।४।। रुसो कवि ऋषी मुनी अनघ सिद्ध योगी रुसो। रुसो हि गृहदेवता, नि कुलग्रामदेवी रुसो।। रुसो खल पिशाच्यही, मलिन डाकिनीही रुसो। न दत्तगुरु साई मा मजवरी कधीही रुसो।।५।। रुसो मृग खग कृमी, अखिल जीवजंतू रुसो। रुसो विटप प्रस्तरा अचल आपगाब्धी रुसो। रुसो ख पवनाग्नि वार अवनि पंचतत्त्वे रुसो। न दत्तगुरु साई मा, मजवरी कघीही रुसो।।६।। रुसो विमल किन्नरा अमल यहिणीही रुसो। रुसो शशि खगादिही गगनि तारकाही रुसो।। रुसो अमरराजही अदय धर्मराजा रुसो। न दत्तगुरु साई मा, मजवरी कघीही रुसो।।७।। रुसो मन सरस्वती, चपलचित्त तेही रुसो। रुसो वपू दिशाखिला कठिण काल तोही रुसो।। रुसो सकल विश्वही मयि तु ब्रह्मगोल रुसो। न दत्तगुरु साई मा, मजवरी कधीही रुसो।।८।। विमूद म्हणूनी हसों, मज न मत्सराही उसो।। पदामिरूचि उल्हसो, जननकर्दमी ना फसो। न दुर्ग घृतिचा घसो, अशिवभाव मागे खसो। प्रपंचि मन हे रुसो, दृढ विरक्ति चित्ती ठसो।।९।। कुणाचिहि घृणा नसो, न च स्पृहा कशाची असो। सदैव इदयी वसो, मनिस घ्यानि साई वसो।। पदी प्रणय वोरसो, निखिल दृश्य बाबा दिसो। न दत्तगुरु साई मा, उपरि याचनेला रुसो।।१०।।

९ - पुष्पांजली

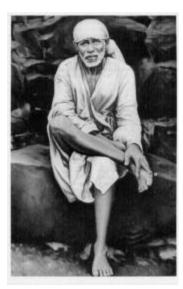
उर्ज यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सधंत यत्र पूर्वे साध्या संति देवाः॥

अ राजाधिराजाय प्रसद्दासाहिने नमी वर्ध वैश्रवणाय कुमहि। स में कामान्कामकामाय मद्दां कामेश्वरो वैश्रवणो द्वधातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। अ स्वस्ति। साम्राज्यं भीज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं माहाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपयायी स्यात्सावभीमः सावयुष आंतादापराधात् पृथिव्ये समुद्रपर्यताया एकराळिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मस्तः परिवेष्टारो मस्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेविश्वेदेवाः सभासद इति॥

(१०) प्रार्थना

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विदितमविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करूणाब्धे श्री प्रभो साईनाथ ।।१।।

श्री सिच्चदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय ॐ राजाधिराज योगीराज परब्रह्म साईनाथ महाराज श्री सिच्चदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय



शेजारती

(रात्रीं १० बाजता)

१ – पांचाही तत्वांची आरती

ओवळू आरती माइया सद्गुरुनाथा, माइया साईनाथा।।
पांचाही तत्वांचा दीप लाविला आता।। निर्गुणाची स्थिति
कैसी आकारा आली, बाबा आकारा आली। सर्वा घटी
मरूनि उरली साई माउली।। १।। ओवाळू॰... घृ.।। रज
तम सत्त्व तिघे माया प्रसवली, माइयावर माया प्रसवली।
मायेचिये पोटीं कैसी मायाउद्भवली।। २।। ओंवाळू॰...
घृ.।। सप्तसागरीं कैसा खेल मांडीला, बाबा खेल
मांडीला।। खेळूनियां खेळ अवधा विस्तार केला।। ओवाळू॰...
घृ ।। ब्रह्मांडीची रचना कैसी दाखविली डोळा, बाबा
दाखविली डोळा।। तुका म्हणे माझा स्वामी कृपाळू भोळा।।
सद्गुरु (साई सदगुरु) भौळा।। ओवाळू॰... घृ ।।

२ –आरती ज्ञानरायाची

आरती ज्ञानराजा। महाकैवल्यतेजा। सेविती साधुसंत। मनु वेधला माझा।। आरती ज्ञानराजा। घृ॰।। लोपले ज्ञान जगी। हित नेणती कोणी। अवतार पांडुरंग। नाम ठेविले ज्ञानी।।१।। आरती ज्ञानराजा।। घृ॰।। कनकाचे ताट करी। उम्या गोपिका नारी। नारद तुंबर हो। सामगायन करी।।२।।। आरती ज्ञानराजा।। घृ॰।। प्रगट गुद्ध बोले। विश्व बद्धाचि केले। राम जनार्दनी। पायी मस्तक ठेविले।।३।।आरती ज्ञानराजा।। घृ॰।।

३ – आरती तुकारामाची

आरती तुकारामा। स्वामी सद्गुरुधामा। सिव्वदानंद मूर्ती। पाय दाखवी आम्हां।। आरती तुकारामा।। घृ॰।। राघवे सागरात। जैसे पाषाण तारिले। तैसे हे तुकोबाचे। अभंग रक्षिले।।१।। घृ॰।। तुकिता तुलनेसी। ब्रह्म तुकासी आले। म्हणोनी रामेश्वरे। चरणी मस्तक ठेविले।।२।। घृ॰।।

४ - जय जय साईनाथ

जय जय साईनाथ आता पहुडावे मंदिरी हो। (x2)। आळवितो सप्रेमे तुजला आरती घेउनि करी हो।। जय जय साईनाथ आता प्रभुडावे मंदिरी हो।। घृ॰।। रंजविसी तू मधुर बोलुनी माय जशी निज मुला हो। (x2) भोगिसि व्याधी तूच हरूनिया निजसेवकदु:खाला हो। (x2) धावुनि भक्तव्यसन हरिसी दर्शन देसी त्याला हो। (x2) झाले असतिल कष्ट अतीशय तुमचे या देहाला हो।। १।। जय॰।। घृ।।क्षमा शयन सुंदर ही शोभा सुमनशेज त्यावरी हो। (x2) ध्यावी थोडी भक्तजनांची पूजनादि चाकरी हो। (x2) ओवाळीतो पंचप्राण, ज्योति सुमती करी हो।। (x2) सेवा किंकर भक्त प्रीती अत्तर परिमळ वारी हो।। २।। जयः।। घु।। सोड्नि जाया दुःख वाटते साई त्वच्वरणांसी हो। (x2) आज्ञेस्तव तव आशीप्रसाद घेउनि निजसदनासी हो। (x2) जातो आता येऊ पुनरपि त्वच्वरणाचे पाशी हो। (x2) उठवू तुजला साईमाउले निजहित साधायासी हो।। ३।। जय॰।। घृ।।

५ - आता स्वामी सुखे

आता स्वामी सुखे निद्रा करा अवधूता। बाबा करा साईनाथा। विन्मय हे सुखधामा जाउनि पहुडा एकांता।। घृ।। वैराग्याचा कुंचा घेउनि चौक झाडीला। बाबा चौक झाडीला। तयावरी सुप्रेमाचा शिडकावा दिधला।। १।। आता॰ घृ।। पायघडया घातल्या सुंदर नवविधा भक्ति। बाबा नवविधा भक्ति। ज्ञानाच्या समया लावुनि उजळल्या ज्योति।। आतां॰ घृ।।२।। भावार्थाचा मंचक हृदयाकाशी टांगिला।। बाबाकाशी टांगिला।। मनाची सुमने करूनी केले शेजेला।। ३।। आतां॰।। द्वैताचे कपाट लावुनि एकत्र केले। बाबा एकत्र केले।। दुर्बुद्धीच्या गाठी सोडूनि पडदे सोडीले।। ४।। आतां॰ घृ।। आशा तृष्णा कल्पनेचा सोडूनि गलबला। बाबा सोडूनि गलबला।। दया क्षमा शांति दासी

उभ्या सेवेला।। ५।। आतां॰ घृ।। अलक्ष्य उन्मनी घेउनी बाबा नाजुक दुःशाला। बाबा नाजुक दुःशाला।। निरंजन सद्गुरू स्वामी निजविले शेजेला।। आतां॰।।६।। सद्गुरु साईनाथ महाराज की जय ।। श्री गुरुदेव दत्त।।

६ - प्रसाद मिळण्याकरिता (अभंग)

पाहे प्रसादाची वाट। द्यावे धुवोनिया ताट।।१।। शेष घेउनी जाईन। तुमचे झालिया भोजन।।२।। झालो आता एकसेवा। तुम्हा आळवितो देवा।।३।। (x2) तुका म्हणे आता चित्त। करुनि राहिलो निश्चित।।४।। (x2)

७ - प्रसाद मिळाल्यानंतर (पद)

पावला प्रसाद आता विठो निजावे। बाबा आता निजावे। आपुला तो श्रम कळो येतसे भावे।।१।। आता स्वामी सुखे निद्रा करा गोपाला। बाबा साई दयाळ। पुरले मनोरथ जातो आपुलो स्थळा।।२।। तुम्हांसी जागवू आम्ही आपुल्या चाछ। बाबा आपुल्या चाछ। शुभाशुभ कर्मे दोष हरावया पीडा ।।३।। आता स्वामी... तुका म्हणे दिघले उच्छिष्टाचे भोजन। उच्छिष्टाचे भोजन। नाही निवडिले आम्हां आपुल्या भिन्न ।।४।। आता स्वामी....

श्री सच्चिदानंद सद्गुरु साईनाथ महाराजकी जय। ॐ राजाघिराज योगीराज परब्रह्म – शेजारतीचा कार्यक्रम संपूर्ण –